दैनिक
facebook HIND SHILA
हिन्द शिला
पंजीकरण संख्या MPBIL/25/A1756
भोपाल
बुधवार
11 नवम्बर 2026
खबर वही, जो हो सच
संपादक - संजीत सिंह बघेल | वर्ष : 01 | अंक : 105 | पृष्ठ: 04 | मूल्य : 03 रूपये | www.hindshilanews.in | सह संपादक-प्रांशु बघेल

पीएम की कुर्सी, परिवार के विवाद और मोदी सरकार

सोनिया गांधी की आत्मकथा की बड़ी बातें

एजेंसी, नईदिल्ली

कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष और कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी की आत्मकथा Belonging: A Journey of Love है, जो 10 नवंबर को बाजार में आ गई. 544 पन्नों की इस किताब के आने से राजनीतिक गलियारों में काफी हलचल मच गई है. इस किताब में सोनिया गांधी ने अपने निजी जीवन से लेकर राष्ट्रीय राजनीति तक के कई किस्से साझा किए हैं, जिन्होंने अब एक नई राजनीतिक बहस छेड़ दी है. उन्होंने कई अहम विषयों पर बात की है, जिनमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनके रिश्ते, अपने पहले बच्चे की मौत, 2004 में प्रधानमंत्री का पद न लेने का उनका फैसला, गांधी परिवार के भीतर की घटनाएं, 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' और कांग्रेस पार्टी की चुनावी हार शामिल हैं।

2004 में प्रधानमंत्री का पद न लेने के अपने फैसले के पीछे की परिस्थितियों पर चर्चा करते हुए, सोनिया गांधी लिखती हैं कि वह जिम्मेदारी की भावना और अपनी निजी चिंताओं के बीच उलझी हुई थीं. एक तरफ पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता का उन पर भरोसा था, तो दूसरी तरफ उन्हें अपने बच्चों राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की चिंता थी. वे दोनों नहीं चाहते थे कि उनकी मां प्रधानमंत्री बनें. सोनिया के अनुसार, यह फैसला लेना बिल्कुल भी आसान नहीं था, यह कई भावनात्मक और राजनीतिक कारणों के जटिल मेल का नतीजा थाद्ध

पीएम मोदी के साथ कोई सार्थक बातचीत नहीं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में सोनिया गांधी बताती हैं कि भले ही वे 12 साल से अधिक समय से प्रधानमंत्री हैं और अब अपने तीसरे कार्यकाल में हैं, लेकिन उनके बीच कभी कोई सार्थक बातचीत नहीं हुई. उन्होंने संसद सत्र के समापन पर होने वाली औपचारिक मुलाकातों का जिक्र करते हुए लिखा है कि जब वे आमने-सामने आते हैं, तो प्रधानमंत्री औपचारिक रूप से 'नमस्ते' तो करते हैं, लेकिन नजरें मिलाने से बचते हैं और कहीं और देखने लगते हैं. इस टिप्पणी के बाद, भाजपा नेताओं ने सोनिया गांधी की आलोचना की है।



मेनका गांधी और संजय गांधी के रिश्ते का जिक्र

अपनी किताब में, सोनिया गांधी ने संजय गांधी और मेनका गांधी की प्रेम कहानी, उनकी शादी के बाद परिवार में पैदा हुए मतभेदों और संजय गांधी की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के बारे में भी बात की है. वह अपने नजरिए से उन घटनाओं का जिक्र करती हैं जो संजय गांधी की मौत के बाद घटीं, जिसके चलते मेनका गांधी को इंदिरा गांधी का घर छोड़ना पड़ा. सोनिया लिखती हैं कि पारिवारिक विवाद के बाद, सार्वजनिक रूप से एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने का दौर शुरू हो गया. इन घटनाओं की तुलना आज के रियलिटी शो से करते हुए, वह इस स्थिति को एक ऐसे पारिवारिक झगड़े के रूप में बताती हैं जो सबके सामने एक तमाशा बन गया.

प्रणब मुखर्जी की पीएम बनने की महत्वाकांक्षा का खुलासा

सोनिया गांधी ने अपनी किताब में 2010 के दौरान पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और तत्कालीन केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम के बीच हुए मतभेदों का जिक्र किया है. उनके अनुसार, इन मतभेदों के बाद प्रणब मुखर्जी अपनी निराशा जाहिर करने के लिए उनसे मिलने आए थे. बातचीत के दौरान, उन्होंने सरकार के शीर्ष स्तर पर बदलाव की जरूरत की ओर इशारा किया. सोनिया लिखती हैं कि वह समझ गई थीं कि उनका क्या मतलब है और उन्हें पता था कि प्रणब मुखर्जी प्रधानमंत्री बनना चाहते हैं. हालांकि, उन्होंने बातचीत का रुख दूसरी तरफ मोड़ दिया. सोनिया के मुताबिक, भले ही प्रणब मुखर्जी निराश थे, लेकिन उन्होंने कभी भी उनके खिलाफ कोई कदम नहीं उठाया।

ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद इंदिरा की आंखों में आए आंसू

सोनिया गांधी ने अपनी किताब में 1984 के 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' से जुड़ी एक अहम घटना का जिक्र किया है. वह लिखती हैं कि स्वर्ण मंदिर परिसर में सैन्य कार्रवाई के लगभग एक हफ्ते बाद, एक खुफिया अधिकारी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को वहां के हालात दिखाने वाली एक फुटेज दिखाई. फुटेज में सैन्य कार्रवाई से हुई तबाही और मारे गए लोगों के दृश्य थे. सोनिया के अनुसार, फुटेज देखते हुए इंदिरा गांधी की आंखों में आंसू आ गए. वह बताती हैं कि इंदिरा गांधी के चेहरे पर दर्द और पछतावे के भाव साफ देखे जा सकते थे।

इस खुलासे ने पंजाब की राजनीति में विवाद खड़ा कर दिया है. शिरोमणि अकाली दल के मुख्य प्रवक्ता अर्शदीप सिंह कलेर ने सोनिया गांधी के बयान पर कड़ी आपत्ति जताई है. इसे सिख समुदाय के जख्मों पर नमक छिड़कने जैसा बताते हुए उन्होंने कहा कि ऑपरेशन ब्लू स्टार सिख समुदाय और श्री अकाल तख्त साहिब पर सीधा हमला था, ऐसे जख्म जो आज भी नहीं भरे हैं।

2019 की हार, पुलवामा और बालाकोट का जिक्र

2019 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी की हार का विश्लेषण करते हुए, सोनिया गांधी ने पुलवामा आतंकी हमले और उसके बाद हुई बालाकोट एयरस्ट्राइक को चुनावी माहौल को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों के रूप में बताया है. वह लिखती हैं कि इन घटनाओं ने चुनावों से पहले राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया. उस चुनाव में कांग्रेस को 52 सीटें मिलीं, जबकि भाजपा ने 303 सीटें जीतीं. सोनिया के अनुसार, हार के बाद राहुल गांधी ने नैतिक जिम्मेदारी ली और कांग्रेस अध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया।

बाबरी विध्वंस ने सोनिया गांधी को अंदर तक झकझोरा

6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विध्वंस को याद करते हुए, सोनिया गांधी लिखती हैं कि उन्होंने टेलीविजन पर इस घटना की तस्वीरें देखीं. जो कुछ हुआ, उससे वह बहुत आहत और भावुक हो गईं. वह बताती हैं कि उस दिन उन्हें एहसास हुआ कि एक धर्मनिरपेक्ष भारत के दृष्टिकोण- एक ऐसा आदर्श जिसे महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू ने बढ़ावा दिया था. उनकी रक्षा के लिए एक लंबे संघर्ष की आवश्यकता होगी।

बीमारी का दर्द और अपने पहले बच्चे को खोने का दुख

अपनी किताब में, सोनिया गांधी ने अपने निजी जीवन के कुछ संवेदनशील अनुभवों को भी साझा किया है. वह बताती हैं कि 2010 में उन्हें ब्रेस्ट कैंसर का पता चला और उनकी सर्जरी हुई. लगभग एक साल बाद, उनके अग्न्याशय (पैंक्रियास) में एक गांठ का पता चला. वह लिखती हैं कि इन बीमारियों के बारे में पता चलने पर, वह और उनके बच्चे बहुत चिंतित हो गए थे और उन्हें इसके गंभीर परिणामों को लेकर कई तरह के डर सता रहे थे।

इसके अलावा, सोनिया गांधी ने पहली बार सार्वजनिक रूप से अपने पहले बेटे की मौत के दर्द को साझा किया है. उनका जन्म समय से लगभग दो महीने पहले, जनवरी 1969 में हुआ था. वह बताती हैं कि जन्म के ठीक एक दिन बाद ही बच्चे का निधन हो गया. इसके बाद, राजीव गांधी और संजय गांधी ने उसे दिल्ली के महरौली में फिरोज गांधी के फार्महाउस पर दफना दिया।

'इटैलियन पासपोर्ट उन्हें इटली से जोड़े रखता था'

अपनी आत्मकथा में, सोनिया गांधी ने अपना इटैलियन पासपोर्ट छोड़ने और भारतीय पासपोर्ट अपनाने की प्रक्रिया का जिक्र किया है. वह बताती हैं कि राजीव गांधी से शादी के बाद भारत में रहते हुए, अपना इटैलियन पासपोर्ट छोड़कर भारतीय पासपोर्ट अपनाना उनके लिए कितना मुश्किल था. वह बताती हैं कि उनका इटैलियन पासपोर्ट उन्हें इटली से जोड़े रखता था- यह उनकी पहचान का एक ऐसा हिस्सा था जिसे वह अपने देश से साथ लाई थीं। वह लिखती हैं, हमारी शादी के कुछ समय बाद, हमारे जीवन में आए बदलावों ने एक नया सवाल खड़ा कर दिया, मेरी राष्ट्रीयता का सवाल. मैंने अपना इटैलियन पासपोर्ट इसलिए रखा था क्योंकि यह मेरे उस हिस्से से जुड़ा था जिसे मैं अपने साथ भारत लाई थी- वह इटली, जिसके लिए मेरे गर्वित और देशभक्त पिता ने अपने साथियों के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी थी।

वह आगे कहती हैं, इसके अलावा, इस पासपोर्ट की मदद से मैं जब चाहे अपने माता-पिता से मिलने जा सकती थी, और इसके लिए मुझे न तो कई सारे फॉर्म भरने पड़ते थे और न ही प्रायोजन पत्र लेने पड़ते थे. लेकिन समय के साथ, मेरा इटली जाना बहुत कम हो गया, अब मुझे वहां की जीवनशैली से कोई गहरा जुड़ाव महसूस नहीं होता।

सीवर में गिरा चार साल का बच्चा, रेस्क्यू के लिए कई टीमों ने मिलकर चलाया अभियान, तलाश तेज



एजेंसी, नईदिल्ली। बाहरी दिल्ली के नांगली विहार में दास गार्डन कॉलोनी के पास एक 4 साल का बच्चा सीवर में गिर गया है। उसके बचाव के NDRF, दिल्ली फायर सर्विस, पुलिस, DDMA और BSF की टीमों ने मिलकर अभियान चलाया है। एक दमकल अधिकारी ने बताया कि हमें 9:45 बजे कॉल मिली। दिल्ली फायर सर्विस की टीम को यहां तैनात किया गया है। 4 साल का एक बच्चा अपनी मां के साथ खेल रहा था, तभी वह खुले मैनहोल से सीवर में गिर गया। बचाव अभियान चल रहा है, लेकिन अभी तक बच्चा नहीं मिला है।

दिल्ली अक्षरधाम मंदिर में अन्नकूट उत्सव की धूम, भगवान को चढ़ाया गया 1,256 व्यंजनों का भोग



एजेंसी, नईदिल्ली। दिल्ली स्थित स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर में मंगलवार 10 नवंबर को अन्नकूट और गोवर्धन पूजा का पावन पर्व श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया. इस मौके पर भगवान के सामने 1,256 शुद्ध सात्विक शाकाहारी व्यंजनों का भव्य अन्नकूट भोग अर्पित किया गया. दरअसल, अन्नकूट का मतलब है 'अन्न का पर्वत'. यह उत्सव भगवान द्वारा दिए गए अन्न, द्रव्य, धन आदि की हमें प्राप्ति हुई है, इसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है. वहीं, उत्तर-पश्चिम भारत के कई राज्यों में आज के दिन से नए वर्ष का भी शुभारंभ होता है।

मुझे शुरू से ही धोखा दिया, मेरे लिए कुछ नहीं किया

बाबुन ने बड़ी बहन ममता बनर्जी पर लगाए आरोप



एजेंसी, कोलकाता। पश्चिम बंगाल की सियासत में ममता बनर्जी लगातार चर्चा में रहती हैं. हालांकि उन्हें कई तरह के झटकों का सामना करना पड़ रहा है. सियासत के इतर निजी जिंदगी में भी उनके रिश्ते अच्छे नहीं चल रहे हैं. पूर्व मुख्यमंत्री के भाई बाबुन ने अपनी बहन पर आरोप लगाया कि उन्होंने शुरू से ही उन्हें धोखा दिया है. उनका कहना है कि ममता दीदी अगर भाई दूज बुलाती भी हैं तो भी वह नहीं जाएंगे। कोलकाता में तृणमूल कांग्रेस पार्टी ममता गुट की नेता और पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भाई बाबुन बनर्जी का कहना है कि ममता ने उनके लिए कुछ नहीं किया है. उन्होंने तो शुरू से ही उन्हें धोखा दिया है. यही नहीं उन्होंने मुझे बंगाल हॉकी एसोसिएशन और बंगाल ओलंपिक एसोसिएशन से हटा दिया. दूसरी ओर, मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने हर मौके पर मेरा साथ दिया है।

मुझे भाई दूज नहीं बुलातीं: बाबुन

मुख्यमंत्री शुभेंदु की तारीफ करते हुए बाबुन मुखर्जी ने कहा, ÷वे ऐसे शख्स हैं जो अपना वादा निभाते हैं. काली पूजा के इस मौके पर मैं सीएम शुभेंदु अधिकारी का स्वागत करूंगा। ममता के साथ भाई-बहन के त्योहार भाई दूज मनाए जाने के बारे में बाबुन बनर्जी ने दावा करते हुए कहा कि दीदी मुझे भाई दूज पर भी नहीं बुलाती हैं. अगर आज वह मुझे बुलाती भी हैं, तो भी मैं उनके पास भाई दूज के लिए नहीं जाऊंगा. ममता बनर्जी ने जो कुछ भी किया है, वह सिर्फ और सिर्फ अभिषेक बनर्जी के लिए किया है।

जम्मू-कश्मीर के गांदरबल में बड़ा हादसा, पर्यटकों से भरी टेंपो ट्रैवलर खाई में गिरी, 18 घायल, 8 की हालत गंभीर

एजेंसी, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के गांदरबल जिले में मंगलवार रात पर्यटकों से भरी एक टेंपो ट्रैवलर हादसे का शिकार हो गई. सोनमर्ग से श्रीनगर जा रही गाड़ी कंगन इलाके में अनियंत्रित होकर करीब 60 फीट गहरी खाई में गिर गई. हादसे में चालक समेत 18 लोग घायल हो गए. इनमें आठ की हालत गंभीर है. सभी घायलों को पहले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र गुंड ले जाया गया, जहां से बेहतर इलाज के लिए श्रीनगर के SKIMS अस्पताल रेफर कर दिया गया।

सोनमर्ग से श्रीनगर जा रही थी टेंपो ट्रैवलर

जानकारी के मुताबिक, टेंपो ट्रैवलर पर्यटकों को लेकर सोनमर्ग से श्रीनगर की तरफ जा रही थी. इसी दौरान गांदरबल के कंगन इलाके में गुंड सुंबल पावर हाउस के पास चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया. इसके बाद गाड़ी सड़क से फिसलकर करीब 60 फीट नीचे गहरी खाई में जा गिरी. इस दौरान वाहन में सवार चालक समेत सभी 18 लोग घायल हो गए. बताया जा रहा कि घायल पर्यटक पंजाब के गुरदासपुर, गुजरात और पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं।

पुलिस टीम चलाया रेस्क्यू ऑपरेशन

हादसे की जानकारी मिलते ही पुलिसकर्मी और स्थानीय निवासी मौके पर पहुंच गए. खाई में गिरी गाड़ी से घायलों को बाहर निकालने के लिए तत्काल बचाव अभियान शुरू किया गया. घायलों की संख्या



अधिक होने के कारण आसपास के स्वास्थ्य केंद्रों से एंबुलेंस भी बुलाई गई. इस दौरान सोनमर्ग, गुंड और गनीवान के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की एंबुलेंस ने घायलों को निकालने और अस्पताल पहुंचाने में मदद की. काफी मशक्कत के बाद सभी घायलों को खाई से बाहर निकालकर प्राथमिक उपचार के लिए पीएचसी गुंड पहुंचाया गया।

8 घायलों की हालत गंभीर, SKIMS रेफर

पीएचसी गुंड में डॉक्टरों ने सभी घायलों को प्राथमिक उपचार दिया. इसके बाद 8 घायलों की हालत गंभीर देखते हुए उन्हें बेहतर इलाज के लिए श्रीनगर के स्चद्धख्स अस्पताल रेफर कर दिया गया. अस्पताल में डॉक्टरों की निगरानी में इनका इलाज चल रहा है. कंगन के एसडीपीओ राजेश रैना ने भी हादसे की पुष्टि की. उन्होंने बताया कि टेंपो ट्रैवलर में चालक समेत 18 लोग सवार थे और सभी घायल हुए हैं।

नया कानून

नेतन्याहू की नीतियां पलटने का एलान

इस्राइल में गादी आइजेनकोट ने कसी कमर, नई सरकार पर बवाल क्यों?

एजेंसी, नईदिल्ली

इस्राइल की नई संसद यानी क्नेसेट का शपथ ग्रहण समारोह शुरू होते ही देश में सियासी बवंडर आ गया है। पूर्व सेना प्रमुख और राजनीति में आए गादी आइजेनकोट ने देश के सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहे बेंजामिन नेतन्याहू की नीतियों को पूरी तरह से पलटने का संकल्प लिया है। राष्ट्रपति ने आइजेनकोट को नई सरकार बनाने की जिम्मेदारी सौंपी है और उनके पास बहुमत साबित करने के लिए छह हफ्ते का वक्त है। खास बात यह है कि नेतन्याहू के विरोधी दलों के पास इस समय संसद में मजबूत बहुमत है, जिसके चलते वे खुलकर सरकार की पुरानी नीतियों के खिलाफ नए कानून लाने की तैयारी में जुट गए हैं।



विपक्षी दलों ने संसद में कौन से नए विधेयक पेश किए हैं?

गठबंधन सरकार के औपचारिक गठन से पहले ही विपक्षी खेमे ने संसद में ताबड़तोड़ कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। आइजेनकोट के गुट ने संसद के पहले ही दिन नेतन्याहू सरकार को घेरने वाले कई कड़े और अहम बिल पेश कर दिए हैं।

7 अक्तूबर 2023 को हमास की तरफ से हुए भयानक हमलों की एक आधिकारिक और स्वतंत्र सरकारी जांच कराने की मांग का कानून।

इस्राइल में प्रधानमंत्री पद पर रहने के लिए अधिकतम कार्यकाल की सीमा तय करना ताकि कोई अनिश्चितकाल तक कुर्सी पर न टिका रहे।

निवर्तमान नेतन्याहू सरकार की ओर से देश की न्यायपालिका की ताकतों को सीमित करने के लिए लाए गए सभी विवादित बदलावों को रद्द करना।

दोनों नेताओं में तनातनी क्यों?

संसद के शपथ ग्रहण समारोह के बाद कार्यवाहक प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बेहद आक्रामक तेवर दिखाए और चुनाव परिणामों पर गंभीर सवाल खड़े किए। उन्होंने दावा किया कि अरब समर्थित पार्टियों ने चुनाव में धांधली करके नतीजे चुराए हैं। इसके साथ ही उन्होंने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि वे देश के दुश्मनों के साथ मिलकर सरकार बनाने की तैयारी कर रहे हैं। दूसरी तरफ, गादी आइजेनकोट ने नेतन्याहू के इस भाषण को पूरी तरह नफरत से भरा और समाज को बांटने वाला करार दिया है। नेतन्याहू ने सार्वजनिक रूप से सवाल उठाया कि क्या विपक्ष ऐसे लोगों पर अपनी सरकार के लिए निर्भर होना चाहता है जो यहूदी देश को मिटाना चाहते हैं। इसके जवाब में आइजेनकोट ने साफ किया कि अगर अरब दल हमास को आतंकवादी संगठन मानते हैं और इस्राइल को यहूदी राष्ट्र स्वीकार करते हैं, तो उनके साथ बात हो सकती है।

कार्तिक पूर्णिमा स्नान पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं



एजेंसी, नईदिल्ली। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान मेला गुढ़मुक्तेश्वर तथा तिगरी मेला की तैयारियों की समीक्षा की. इस दौरान मेरठ, बरेली, अमरोहा, हापुड़, मुरादाबाद आदि मंडलों/जनपदों के प्रशासन व पुलिस विभाग के अधिकारी भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़े. मुख्यमंत्री ने समयबद्ध तैयारियों का निर्देश दिया. उन्होंने कहा कि वेस्टर्न यूपी का मिनी कुम्भ यह मेला श्रद्धा, अनुशासन व स्वच्छता का प्रतीक बनेगा. पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षित, सुमग यातायात व स्वच्छता के पुख्ता इंतजाम कर लें। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 17 से 26 नवंबर तक लगने वाले इस मेले में 25 से 30 लाख श्रद्धालु शामिल होंगे. 24 नवंबर को मुख्य स्नान पर्व होगा. यहां आस्था, परंपरा व सुव्यवस्था का संगम होगा, इसलिए किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी. सभी तैयारियां समयबद्ध ढंग से कर ली जाएं. ऐसे में यहां सुरक्षा, स्वच्छता, पेयजल समेत सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

संपादकीय

लालच की मिलावट

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण द्वारा त्योहारी सीजन में मिलावटी खाद्य-डेयरी उत्पादों की गुणवत्ता जांच-पड़ताल के लिये राष्ट्व्यापी अभियान चलाया गया। इस देशव्यापी मुहिम में करीब 3,280 टन खाद्य उत्पाद जब्त किए गए। जिसकी अनुमानित कीमत 81.8 करोड़ रुपये बतायी जाती है। ये अभियान गत एक सितंबर से पांच नवंबर के बीच चलाया गया। नियामक संस्था ने 56,000 अधिक प्रतिष्ठानों की जांच पड़ताल की। इस दौरान खाद्य पदार्थों के 43,939 नमूने भरे गए। दस हजार कारोबारियों को स्थिति में सुधारों के लिये नोटिस जारी किए गए। करीब 1,133 लोगों के लाइसेंस निलंबित किए गए। कुल 52 लोगों के लाइसेंस रद्द किए गए। साथ ही 410 के खिलाफ मामले दर्ज किए गए। भारत जैसे विशाल देश में ये बरामदगी मिलावट के समुद्र में एक टापू जितनी है। ये आंकड़े बताते हैं कि स्थिति बेहद जटिल है और रोकने के प्रयास कितने कम। सवाल ये भी है कि ये कार्रवाई त्योहारी सीजन में ही क्यों? क्यों यह एक्शन साल भर नहीं चलना चाहिए? दोषी पाये जाने पर सख्त सजा का प्रावधान क्यों नहीं है? अक्सर लाइसेंस के निलंबन या रद्द करने के बाद आरोपी लोग दूसरे संस्थान व परिवार के अन्य सदस्य के नाम से संस्थान खोलकर फिर मिलावट के खेल में लग जाते हैं। वहीं दूसरी ओर, ये नतीजे पंजाब और हरियाणा के लिये भी बेहद चिंताजनक हैं, जहां खाद्य पदार्थों में मिलावट के कारण इस क्षेत्र की बड़ी डेयरी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ताओं का भरोसा डिग रहा है। इसका खमियाजा उन निर्दोष लोगों को भुगतना पड़ता है, जो नहीं जानते कि वे एक धीमा जहर खरीद रहे हैं। पंजाब में दूध व डेयरी उत्पादों के नमूनों में भारी कमियां पाई गई हैं। हरियाणा में करीब पचास हजार किलोग्राम मिलावटी मिठाइयां और पनीर नष्ट किया गया है। नूंह में मिलावटी व हानिकारक पनीर की बरामदगी चिंता बढ़ाने वाली है। जो बताता है कि मुनाफा कमाने के लिये कुछ लोग किस हद तक गिर सकते हैं। निस्संदेह, ऐसी कार्रवाई को त्योहारी सीजन तक या फिर लोगों की शिकायत करने तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। सही मायने में दूध व उससे बने उत्पादों, खाद्य तेल, मसालों और पैकेटबंद खाद्य उत्पादों की गुणवत्ता की जांच के लिये सालभर अभियान चलाये जाने चाहिए। साथ ही राज्यों में खाद्य सुरक्षा से जुड़े विभागों को बेहतर सुविधा वाली आधुनिक प्रयोगशालाएं उपलब्ध करायी जानी चाहिए। जांच-पड़ताल के लिए पर्याप्त संख्या में कर्मचारियों की नियुक्तियां हों, उनके कानूनी अधिकार बढ़ाए जाएं तथा जांच के बाद तय समय-सीमा के भीतर कानूनी कार्रवाई करना सुनिश्चित किया जाए। रडार पर वे लोग रहें जो ऐसे अपराध बार-बार करते हैं। इसके अलावा संबंधित विभागों द्वारा की जाने वाली कार्रवाई में जो सैंपल फेल हुए, जिन प्रतिष्ठानों ने मिलावट की और जिनके खिलाफ कार्रवाई हुई, उस जानकारी को उपभोक्ताओं के हित में सार्वजनिक किया जाना चाहिए। निस्संदेह, ये घटिया काम जनस्वास्थ्य से अक्षम्य खिलवाड़ हैं, दोषियों को गंभीर अपराध जैसा दंड भी मिलना चाहिए। जब हम भारत को वैश्विक खाद्य-प्रसंस्करण केंद्र बनाने के सपने देखते हैं तो खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के मानक भी भरोसेमंद होने चाहिए। साथ ही मानकों को सख्ती से लागू भी किया जाना चाहिए। सरकारों व नियामक संस्थाओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उपभोक्ता की थाली में जो भी खाना पहुंचे, वह सुरक्षित हो।

स्वच्छ पर्यावरण और बेहतर स्वास्थ्य

सेहत के नजरिए से देखें तो पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण और रसायनों ने कई तरह से हमें नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया है। अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण में बढ़ती विषाक्त ता कैंसर जैसे गंभीर रोगों के जोखिम को कई गुना तक बढ़ा देती है। हवा, पानी, मिट्टी और हमारे भोजन में बढ़ते रसायनों की मात्रा कैंसर का कारण बनने वाले पर्यावरणीय कारकों में से प्रमुख हैं। विश्व पर्यावरण दिवस के इस लेख में हम हमारे भोजन में बढ़ती विषाक्त ता और इसके दुष्प्रभावों के बारे में समझने की कोशिश करेंगे।

क्रांति कुमार पाठक ...



दीपावली का पर्व हमें स्वच्छ पर्यावरण पर्यावरण का संदेश देता है, किंतु इसके विपरीत बीता दीपावली हमें दमघोंटू और प्रदूषित पर्यावरण से यथाशीघ्र निजात पाने की ओर कदम बढ़ाने का संदेश दिया है। क्योंकि स्वच्छ पर्यावरण और बेहतर स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। यानी कि एक के बिना दूसरे की कल्पना करना थोड़ी बेमानी सी होगी। हालांकि आधुनिकता, औद्योगिक क्रांति और असीम आवश्यकताओं ने हमारे अस्तित्व के एक पैर को लकवा ग्रस्त कर दिया है। तेजी से विकास की ललक ने हमें इतना आतुर बना दिया है कि आज के चक्कर में स्वयं के ही भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। पर्यावरण के साथ पिछले कुछ दशकों से जो अत्याचार हो रहा है, वह इसी खिलवाड़ का आईना है। नतीजा, भोजन से लेकर सांस तक, सब जगह बस प्रदूषण और विषाक्तता ही दिख रही है। ऐसी विषाक्तता जो संभवतः अभी नजर न आ रही हो, पर उसके दुष्प्रभाव जरूर देखे जाते रहे हैं। जब हम पर्यावरण संरक्षण को लेकर विचार-मंथन करते हैं, लोगों को इसके बारे में सचेत किया जाता है, ताकि हम, हमारी आंखों के सामने ही गड़बड़ा रहे भविष्य को सुधार सकें। पर क्या इस वैश्विक संकट के लिए एक दिन चर्चा कर लेना ही काफी है? क्योंकि पर्यावरण के साथ जो दोहन पिछले कुछ दशकों में हुआ है, उसने दुष्प्रभावों की ऐसी बड़ी खाई बना दी है, जिसे भरना इतना आसान नहीं होने वाला है।

सेहत के नजरिए से देखें तो पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण और रसायनों ने कई तरह से हमें नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया है। अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण में बढ़ती विषाक्तता कैंसर जैसे गंभीर रोगों के जोखिम को कई गुना तक बढ़ा देती है। हवा, पानी, मिट्टी और हमारे भोजन में बढ़ते रसायनों की मात्रा कैंसर का कारण बनने वाले पर्यावरणीय कारकों में से प्रमुख हैं। विश्व पर्यावरण दिवस के इस लेख में हम हमारे भोजन में बढ़ती विषाक्तता और इसके दुष्प्रभावों के बारे में समझने की कोशिश करेंगे।

कैंसर के कारकों को लेकर हुए अध्ययन में पाया गया है कि दुनियाभर में हर साल सामने आ रहे कैंसर के मामलों में से 70-90 फीसदी के लिए पर्यावरण और जीवनशैली के कारकों को जिम्मेदार माना जा सकता है। जॉन्स हॉपकिन्स के शोधकर्ताओं का कहना है कि 65त्न कैंसर के मामले रैंडम डीएनए उत्परिवर्तन का परिणाम हैं, जबकि शेष 35 फीसदी कैंसर के मामलों के लिए पर्यावरणीय और वंशानुगत कारकों के संयोजन को कारक के रूप में देखा जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि तंबाकू का धुआं और सूरज की किरणों के कारण होने वाले कैंसर से तो आप बच सकते हैं, पर जिस प्रदूषित हवा में हम सांस ले रहे हैं, जो प्रदूषित पानी और भोजन हम खा-पी रहे हैं, उससे होने वाले खतरे को कैसे कम किया जा सकेगा? यहां यह कहना भी गलत नहीं होगा कि हमारी थाली में जो भोजन रोजाना आ रहा है, उसमें भी विषाक्तता हो सकती है, इतनी विषाक्तता जो आपको कैंसर का शिकार बना सकती है। पर्यावरण प्रदूषण और विषाक्तता की बात करते समय हमेशा ख्याल वायु प्रदूषण की तरफ ही जाता है, पर क्या आप जानते हैं कि मृदा प्रदूषण भी कैंसर के जोखिम को बढ़ाने वाला कारक है।

चीनी वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तेजी से हो रहे शहरीकरण और औद्योगीकरण के साथ पर्यावरण और मिट्टी में बढ़ती धातुओं की मात्रा पेट के कैंसर के जोखिम को कई गुना तक बढ़ा देती है। इस तरह की मिट्टी में पैदा होने वाले फसलों में भी इस विषाक्तता का अंश शेष रह जाता है जिससे कई तरह की स्वास्थ्य जोखिम बढ़ जाता है। पश्चिमी देशों के आंकड़े उठाकर देखें तो स्पष्ट होता है कि यहां कैंसर के निदान के 30 फीसदी मामले आहार संबंधी कारकों से जुड़े हुए हैं।

इसे सरल भाषा में ऐसे समझा जा सकता है कि फसल की पैदावार को बढ़ाने के लिए हम तमाम तरह के रसायनों-उर्वरकों को प्रयोग में लाते हैं। इनमें से कई तो प्रतिबंधित भी हैं। इनके प्रयोग से मिट्टी और फसल दोनों में विषाक्तता बढ़ती है। ऐसे में उस भूमि से होने वाली पैदावार और उन फसलों का सेवन जाने-अनजाने हमें जानलेवा कैंसर के करीब लाता जा रहा है। विकासशील देशों की स्थिति पर नजर डालें तो पता चलता है कि आहार की विषाक्तता के कारण यहां कैंसर का जोखिम 20 फीसदी के करीब रहता है। उदाहरण के लिए कई शोध में वैज्ञानिकों ने हमारे दैनिक आहार में ऐसे सिंथेटिक्स की मौजूदगी पाई गई है जो सीधे तौर पर लिवर कैंसर का कारण बनती है। फसलों की पैदावार को बढ़ाने के लिए व्यापक रूप से नाइट्राइट साल्ट, सोडियम नाइट्राइट, पोटेशियम नाइट्राइट आदि का प्रयोग किया जाता रहा है। ये न सिर्फ पर्यावरण को क्षति पहुंचाने वाले होते हैं, साथ ही भोजन में विषाक्तता को बढ़ाकर कई तरह की गंभीर बीमारियों के जोखिम को भी बढ़ा देते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण और फसलों में रसायनों के बढ़ते प्रयोग ने न सिर्फ कैंसर, साथ ही कई अन्य रोगों के जोखिम को कई गुना तक बढ़ा दिया है। रिपोर्ट्स बताते हैं कि जिन अनाजों को स्वस्थ मानकर हम सेवन करते आ रहे हैं, असल में उसकी पैदावार को बढ़ाने और फसल को बीमारियों से बचाने के लिए कई ऐसे रसायनों का छिड़काव किया जाता रहा है, जिसे बेहद हानिकारक मानते हुए कई देशों ने प्रतिबंधित कर रखा है।

नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट ने बाकायदा प्रतिबंधित रसायनों की सूची भी साझा की है।फेडरल इंसेक्टिसाइड फंगीसाइड एंड रोडेंटिसाइड एक्ट (एफआईएफआरए) संघीय कानून है जो संयुक्त राज्य अमेरिका में कीटनाशकों के पंजीकरण, वितरण, बिक्री और उपयोग को नियंत्रित करता है। इस संस्था ने कई रसायनों और कीटनाशकों के प्रयोग को बैन किया हुआ है, फिर भी कई देशों में इनका प्रयोग किया जा रहा है। ऐसी ही कुछ उदाहरण देखिए- डीडीटी, ऐसा ही एक कीटनाशक है जिसका छिड़काव फसलों को लगने वाले रोग से बचाता है, हालांकि अध्ययनों में इसे अकार्बनिक विषाक्त पदार्थ के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो जल प्रदूषण और पर्यावरण के लिए खतरे का कारण बनता है। फसलों में इसका उपयोग विषाक्तता को बढ़ावा देता है। नियोनिकोटिनोइड्स और इस वर्ग के कीटनाशकों और रसायनों को यूरोप सरकार ने प्रतिबंधित किया हुआ है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई देशों में इसका उपयोग किया जा रहा है। इसका छिड़काव विभिन्न खाद्य फसलों में अवांछित कीटों को नष्ट करने में सहायक जरूर है, पर इसके दीर्घकालिक दुष्प्रभावों में पर्यावरण में विषाक्तता बढ़ने और ऐसी फसल के अनाज के सेवन से कई तरह की गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का जोखिम हो सकता है। बीएचसी का सामान्य उपयोग बेंजीन हेक्सा क्लोरीन के रूप में किया जाता है। यह एक उद्यान रसायन है जो फसलों को खतरनाक कीटों से सुरक्षा देती है। हालांकि अध्ययनों से पता चलता है कि रासायनिक स्प्रे के रूप में बीएचसी का उपयोग करने से मिट्टी प्रदूषित हो जाती है। छिड़काव वाले अनाज का सेवन तंत्रिका तंत्र और कोशिकाओं से संबंधित गंभीर रोगों के जोखिम को काफी बढ़ा देता है।

अब तक के तथ्यों और प्रस्तुत किए गए अध्ययनों की रिपोर्ट के बाद आपके मन में भी यह प्रश्न अवश्य होगा कि हम रोजाना जिन चीजों का सेवन करते हैं, असल में उसकी पैदावार को बढ़ाने के लिए भी तो हानिकारक और जानलेवा रसायन-कीटनाशकों का प्रयोग किया जा रहा है, तो क्या यह सुरक्षित है? यूके कैंसर रिसर्च द्वारा इसी विषय को लेकर किए गए शोध में पाया गया कि फसलों में होने वाले हानिकारक कीटनाशकों और रसायनों के छिड़काव से वैसे तो सीधे तौर पर कैंसर का खतरा नहीं होता है।

ऐसी मिट्टी में उपजे फसल में बहुत थोड़ी मात्रा में कीटनाशक हो सकते हैं, इनका स्तर इतना कम होता है कि इसे कैंसर का जोखिम कारक नहीं कहा जा सकता है। हालांकि अगर प्रतिबंधित रसायनों का उपयोग और फसलों की रखरखाव के लिए हानिकारक कीटनाशकों के उपयोग को लेकर सख्ती नहीं बरती गई तो इससे निश्चित ही भविष्य में जोखिम बढ़ सकता है। इस तरह के जोखिमों को कम करने के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञ फलों और सब्जियों को खाने से पहले अच्छी तरह से धोने की सलाह देते हैं।

भाई-बहन के आत्मीय रिश्ते को दर्शाता त्योहार भाई दूज

भारतीय परिवारों की एकता यहां के नैतिक मूल्यों पर टिकी होती है। इन नैतिक मूल्यों को मजबूती देने के लिए वैसे तो हमारे संस्कार ही काफी हैं, लेकिन फिर भी इसे अतिरिक्त मजबूती देते हैं हमारे त्यौहार। इन्हीं त्यौहारों में भाई-बहन के आत्मीय रिश्ते को दर्शाता एक त्यौहार है भैया दूज...

डॉ. सत्यवान सौरभ ...



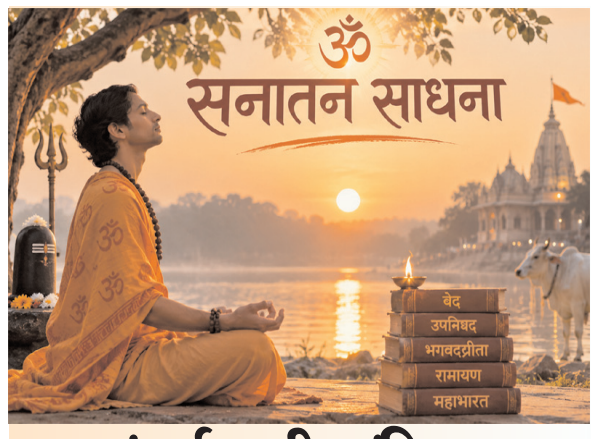
भैया दूज कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाने वाला हिंदू धर्म का पर्व है जिसे यम द्वितीया भी कहते हैं। भारतीय समाज में परिवार सबसे अहम पहलू है। भारतीय परिवारों की एकता यहां के नैतिक मूल्यों पर टिकी होती है। इन नैतिक मूल्यों को मजबूती देने के लिए वैसे तो हमारे संस्कार ही काफी हैं, लेकिन फिर भी इसे अतिरिक्त मजबूती देते हैं हमारे त्यौहार। इन्हीं त्यौहारों में भाई-बहन के आत्मीय रिश्ते को दर्शाता एक त्यौहार है भैया दूज।

महत्त्व : हिंदू समाज में भाई-बहन के पवित्र रिश्तों का प्रतीक भैया दूज (भाई-टीका) पर्व काफी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। भाई-बहन के पवित्र रिश्तों के प्रतीक के पर्व को हिंदू समुदाय के सभी वर्ग के लोग हर्षोल्लास से मनाते हैं। इस पर्व पर जहां बहनें अपने भाई की दीर्घायु व सुख समृद्धि की कामना करती हैं तो वहीं भाई भी शगुन के रूप में अपनी बहन को उपहार स्वरूप कुछ भेंट देने से नहीं चूकते।

भैया दूज की कथा : कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनाए जाने वाले इस त्यौहार के पीछे की ऐतिहासिक कथा भी निराली है। पौराणिक आख्यान के अनुसार सूर्य पुत्री यमुना ने अपने भाई यमराज को आमंत्रित किया कि वह उसके घर आकर भोजन ग्रहण करें, किन्तु व्यस्तता के कारण यमराज उनका आग्रह टाल जाते थे। कहते हैं कि कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमराज ने यमुना के घर जाकर उनका सत्कार ग्रहण किया और भोजन भी किया। यमराज ने बहन को वर दिया कि जो भी इस दिन यमुना में स्नान करके बहन के घर जाकर श्रद्धापूर्वक उसका सत्कार ग्रहण करेगा, उसे व उसकी बहन को यम का भय नहीं होगा। तभी से लोक में यह पर्व यम द्वितीया के नाम से प्रसिद्ध हो गया। भाइयों को बहनों की टीकाकरण के चलते इसे भातृ द्वितीया या भाई दूज भी कहते हैं।

मनाने की विधि : इस पूजा में भाई की हथेली पर बहनें चावल का घोल लगाती हैं। उसके ऊपर सिंदूर लगाकर कद्दू के फूल, पान, सुपारी मुद्रा आदि हाथों पर रखकर धीरे-धीरे पानी हाथों पर छोड़ते हुए कुछ मंत्र बोलती हैं जैसे 'गंगा पूजे यमुना को यमी पूजे यमराज को, सुभद्रा पूजे कृष्ण को, गंगा यमुना नीर बहे मेरे भाई की आयु बढ़े'। इसी प्रकार कहीं इस मंत्र के साथ हथेली की पूजा की जाती है 'सांप काटे, बाघ काटे, बिच्छू काटे जो काटे सो आज काटे'। इस तरह के शब्द इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता है कि आज के दिन अगर भयंकर पशु काट भी ले तो यमराज के दूत भाई के प्राण नहीं ले जाएंगे। कहीं-कहीं इस दिन बहनें भाई के सिर पर तिलक लगाकर उनकी आरती उतारती हैं और फिर हथेली में कलावा बांधती हैं। भाई का मुंह मीठा करने के लिए उन्हें माखन मिस्री खिलाती हैं। संध्या के समय बहनें यमराज के नाम से चौमुख दीया जलाकर घर के बाहर रखती हैं। इस समय ऊपर आसमान में चील उड़ता दिखाई दे तो बहुत ही शुभ माना जाता है। नवंबर का महीना अपने साथ बहुत से त्योहार और खुशियां लेकर आया है इस महीने की शुरुआत से ही त्योहारों की बौछार शुरू हो गई है । पहले धनतेरस फिर दिवाली और अब भैया दूज। भाई-बहन के अटूट प्यार, स्नेह और विश्वास का प्रतीक भाई दूज का पर्व इस वर्ष 11 नवंबर को मनाया जाएगा। भैया दूज केवल तिलक लगाने और उपहार देने का त्योहार नहीं, बल्कि भाई-बहन के उस रिश्ते का उत्सव है, जिसमें बचपन की यादें, अपनापन और एक-दूसरे की खुशहाली की दुआएं जुड़ी होती हैं। जब बहनें तैयार होकर, पूरे प्यार से भाई के माथे पर तिलक लगाती हैं तो यह मंगलकामना का प्रतीक बन जाता है। अक्सर त्योहारों पर एक ही चिंता सताती है की आखिर इसका शुभ मुहूर्त क्या है और किस तरह से इस त्यौहार को मनाया जाए ।

भैया दूज के दिन बहनें पूजा की थाली सजाती हैं और भाई के माथे पर तिलक लगाकर उसकी लंबी आयु, अच्छे स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। भाई भी बहन को उपहार देकर उसके प्रति अपना प्यार जाहिर करते हैं। यह परंपरा सिर्फ उपहारों के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि एक-दूसरे के प्रति सम्मान, विश्वास और जिम्मेदारी निभाने का भाव भी इसमें शामिल होता है। बात यह भी है कि जैसे-जैसे समय बदला, जीवन में व्यस्तता ब?ती गई, जिस त्योहार को बचपन में सब मिलजुल कर मनाते थे उस त्यौहार के लिए कभी बहन घर पहुंची तो भाई न आ सका और भाई पहुंचा तो बहन नहीं पहुँच सकी, और कहीं बहन भाई के घर पहुंचती है तो कहीं भाई बहन से तिलक करवाने उसके घर जाता है, पर दूरी चाहे कितनी भी हो, इस दिन अपनों से मिलने की खुशी अलग ही होती है।



अंतर्मन की शांति का सनातन साधना मार्ग

मनुष्य के जीवन में सुख और शांति की खोज जितनी पुरानी है, मन की अतृप्ति की समस्या भी उतनी ही पुरानी है। मन को कितना भी मिल जाए, उसकी इच्छाओं का सिलसिला समाप्त नहीं होता। एक इच्छा पूरी होती है तो दूसरी जन्म ले लेती है। परिणामस्वरूप, मनुष्य प्राप्त उपलब्धियों का आनंद लेने के बजाय अप्राप्त वस्तुओं के पीछे भागता रहता है। जीवन की यही विडंबना है कि सुख जुटाने के प्रयास में हम इतने व्यस्त हो जाते हैं कि सुख का अनुभव करना ही भूल जाते हैं। वास्तव में जीवन में आनंद केवल साधनों से नहीं, बल्कि साधना, संतोष और सद्विचारों से प्राप्त होता है। प्रकृति में पशु-पक्षी अपनी जरूरतों के अनुरूप जीवन जीते हैं, जबकि मनुष्य विवेकशील होते हुए भी कई बार असीम संग्रह और प्रतिस्पर्धा में उलझ जाता है। सुविधाएं बढ़ती जाती हैं, लेकिन संतोष घटता जाता है। इसका कारण अभाव से अधिक इच्छाओं का अनियंत्रित विस्तार है। जिसने आवश्यकताओं और अनावश्यक लालसाओं के बीच अंतर समझ लिया, उसने सुखी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र पा लिया। भारतीय संस्कृति में इसके अनेक प्रेरक उदाहरण हैं। रामायण में भगवान श्रीराम का जीवन सिखाता है कि परिस्थितियां मनुष्य की इच्छा के अनुकूल न हों, तब भी धर्म, मर्यादा और कर्तव्य का साथ नहीं छोडऩा चाहिए। राजतिलक की संभावना से वनवास की परिस्थिति तक उनका धैर्य हमें बताता है कि आंतरिक शांति बाहरी अनुकूलताओं पर ही निर्भर नहीं होती। इस शिक्षा को व्यवहार में उतारने के लिए सबसे पहले अपनी इच्छाओं की जांच करना आवश्यक है। कोई वस्तु खरीदने या किसी से आगे निकलने की तीव्र इच्छा हो तो स्वयं से पूछें- क्या यह मेरी वास्तविक आवश्यकता है, या दूसरों को देखकर उत्पन्न हुई लालसा? क्या इसकी प्राप्ति से स्थायी संतोष मिलेगा? मन को संतोष की दिशा देने के लिए कृतज्ञता का अभ्यास करें। भारतीय परंपरा में अन्न, जल, प्रकृति, माता-पिता और गुरु के प्रति आभार व्यक्त करने की भावना का विशेष महत्त्व रहा है। प्रतिदिन रात को सोने से पहले उन तीन बातों को याद करें जिनके लिए आप कृतज्ञ हैं। परिवार का स्नेह, भोजन की उपलब्धता, किसी का सहयोग या दिनभर में किया गया कोई अच्छा कार्य- ये छोटी-छोटी अनुभूतियां जीवन की समृद्धि का बोध कराती हैं। मन की अतृप्ति का एक बड़ा कारण दूसरों से तुलना करना भी है।

जिम्मेदारों की खामोशी पर भड़का रहा है आक्रोश, जल्द सुधार न होने पर आंदोलन की चेतावनी

एक महीने से बंद पड़ा न्यू राजनगर का वाटर एटीएम

एसईसीएल के सिविल विभाग की उदासीनता से प्यासे भटक रहे कॉलरी कामगार और राहगीर ।

हिन्द शिला, रविंद्र सिंह/अनूपपुर

एसईसीएल हसदेव क्षेत्र के अंतर्गत न्यू राजनगर नगर परिषद क्षेत्र में स्थित बनगवां थाने के समीप स्थापित आर.ओ. वाटर वेंडिंग मशीन (वाटर एटीएम) पिछले एक महीने से पूरी तरह ठप पड़ी है। कभी इस संयंत्र से हजारों की तादाद में कॉलरी कामगार, राहगीर और स्थानीय नागरिक शुद्ध पेयजल प्राप्त करते थे, लेकिन आज यह मशीन प्रशासनिक उपेक्षा और सिविल विभाग की लापरवाही की भेंट चढ़ चुकी है।

ताले में कैद उम्मीदें, ठप पड़ी जनसुविधा

स्थानीय नागरिकों और कॉलरी कामगारों के अनुसार, वाटर एटीएम के खराब हुए एक महीने से अधिक का समय बीत चुका है, लेकिन कॉलरी प्रशासन और संबंधित सिविल विभाग ने इसकी सुध तक नहीं ली है। भीषण गर्मी और रोजमर्रा की जरूरतों के बीच जब लोग दूर-दराज से पानी भरने आते हैं, तो मशीन पर लटका ताला और सूखे पड़े



नल उनके हिस्से सिर्फ मायूसी छोड़ जाते हैं। आम जनता को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के बड़े-बड़े दावों के साथ लगाया गया यह संयंत्र आज महज एक सफेद हाथी साबित हो रहा है।

करोड़ों के मेंटेनेंस टेंडर, पर धरातल पर परिणाम शून्य

एक तरफ जहां एसईसीएल हसदेव एरिया में सिविल मेंटेनेंस, मरम्मत और रखरखाव के नाम पर हर साल करोड़ों रुपये के भारी-भरकम टेंडर जारी किए जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ धरातल पर बुनियादी सुविधाओं की यह बदहाली कई गंभीर सवाल खड़े करती है। इस स्थिति ने स्थानीय जनता और कामगारों के मन में कई बड़े सवाल ला खड़े किए हैं।

कि आखिर करोड़ों रुपये का मेंटेनेंस बजट किन फाइलों और किनकी जेबों में समा रहा है? एक महीने से बंद पड़े इस जनसुविधा केंद्र को सुधारने की जहमत सिविल विभाग क्यों नहीं उठा रहा? कॉलरी कामगारों और आम जनता के स्वास्थ्य व मूलभूत अधिकारों के प्रति यह उदासीनता कब खत्म होगी?

जल्द बहाली न हुई तो फूटेगा जनआक्रोश

क्षेत्र के नागरिकों व कामगारों ने तीखी नाराजगी जताते हुए स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि सिविल विभाग और कॉलरी प्रबंधन ने तत्काल संज्ञान लेकर इस वाटर एटीएम को दुरुस्त नहीं कराया, तो वे प्रबंधन के खिलाफ मोर्चा खोलने को विवश होंगे। अब देखना यह है कि कुंभकर्णी नींद में सोए जिम्मेदार अधिकारी इस मामले में कब जागते हैं और कामगारों को उनके पेयजल का अधिकार कब वापस मिलता है।

ग्वालवंशियों ने पारंपरिक श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया दीपावली व गोवर्धन पर्व



हिन्द शिला, परसवाड़ा

सामाजिक एकता और परंपरा का अनूठा संगम ।

ग्राम झिरिया में ग्वालवंशियों द्वारा दीपावली का पावन पर्व और गोवर्धन पूजा अत्यंत हर्षोल्लास, पारंपरिक श्रद्धा और सामूहिक उल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर पूरा गांव उत्सव के रंग में रंगा नजर आया। दीपावली के दूसरे दिन ग्राम के खिला मुठवा में पारंपरिक रीति-रिवाजों और वैदिक मान्यताओं के अनुसार गोवर्धन पूजा का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों ने विधि-विधान से गोवर्धन पर्वत की पूजा-अर्चना की, गौमाता को विशेष रूप से भोजन (ग्रास) कराया तथा क्षेत्र की सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की मंगलकामना की।

इस धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता इसमें ग्रामीणों की व्यापक सहभागिता रही। कार्यक्रम में गांव के बुजुर्गों, मातृशक्ति और युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बुजुर्गों के सान्निध्य और मार्गदर्शन ने जहां आयोजन को पारंपरिक संस्कारों की गरिमा प्रदान की, वहीं मातृशक्ति और युवाओं की सक्रिय उपस्थिति ने यह विश्वास दिलाया कि हमारी सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित हाथों में है। और आने वाली पीढ़ियों तक पूरी निष्ठा के साथ पहुंच रही है। प्रकृति और पशुधन के प्रति कृतज्ञता आयोजन के दौरान वक्ताओं और ग्रामीणों ने भारतीय संस्कृति में गोवर्धन पूजा के आध्यात्मिक और व्यावहारिक महत्व पर प्रकाश डाला। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत के पूजन का संदेश हमें प्रकृति, पर्यावरण और पशुधन के संरक्षण की प्रेरणा देता है।

छठ पर्व की तैयारियों को लेकर नगर परिषद अध्यक्ष ने किया घाटों का निरीक्षण

साफ-सफाई, प्रकाश एवं पेयजल व्यवस्था दुरुस्त करने के दिए निर्देश, पर्व से पहले तैयार होंगे सभी छठ घाट ।

हिन्द शिला/ रविंद्र कुमार सिंह अनूपपुर

नगर परिषद बनगवां (राजनगर) क्षेत्र में लोक आस्था और सूर्य उपासना के महापर्व छठ को लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। पर्व के दौरान श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए नगर परिषद प्रशासन ने छठ घाटों की व्यवस्था दुरुस्त करने की कवायद तेज कर दी है। मंगलवार सुबह से ही नगर परिषद बनगवां के अध्यक्ष यशवंत सिंह ने नगर क्षेत्र के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने घाटों की साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल सहित अन्य आवश्यक सुविधाओं का जायजा लिया। उन्होंने नगर परिषद के कर्मचारियों एवं स्वच्छता मित्रों को निर्देशित किया कि छठ पर्व से पूर्व सभी घाटों की समुचित साफ-सफाई कराई जाए तथा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए जरूरी व्यवस्थाएं समय रहते पूरी कर ली जाएं। लखन लाल पनिका मुख्य नगर



पालिका अधिकारी ने भी छठ पर्व से पूर्व सभी नगर के सभी छठ घाटों को तैयार करने हेतु स्वयं निरीक्षण कर नगर परिषद के कर्मचारियों को कार्य निर्देश दिए।

नगर परिषद क्षेत्र के प्रमुख छठ घाटों में जोड़ा तालाब राजनगर, न्यू राजनगर साइडिंग तालाब एवं छोटी भलमुड़ी शांतिनगर तालाब शामिल हैं। इन सभी स्थानों पर नगर परिषद द्वारा साफ-सफाई का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

निरीक्षण के दौरान अध्यक्ष यशवंत सिंह ने कहा,कि छठ पर्व क्षेत्र के लोगों की आस्था से जुड़ा महत्वपूर्ण महापर्व है। श्रद्धालुओं को पूजा-अर्चना और अर्घ्य देने में किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए नगर परिषद बनगवां (राजनगर) द्वारा सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। उन्होंने आश्वस्त किया कि छठ पर्व से पहले सभी घाटों को पूरी तरह तैयार कर लिया जाएगा।

गांव-गांव खुलेआम बिक रही शराब

बोलेरो और दोपहिया वाहनों से सप्लाई का आरोप

हिन्द शिला, मंडला

मंडला जिले के आदिवासी बाहुल्य विकासखंड मोहगांव में कथित अवैध शराब बिक्री और परिवहन का मामला लगातार चर्चा का विषय बना हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में गांव-गांव शराब पहुंचाने और खुलेआम बिक्री किए जाने के आरोपों ने पुलिस एवं आबकारी विभाग की निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि क्षेत्र में बोलेरो वाहन क्रमांक ष्ट्त04स्क्क7902 सहित अन्य दोपहिया वाहनों के माध्यम से अलग-अलग गांवों तक शराब की सप्लाई की जा रही है। यदि इन आरोपों की पुष्टि होती है, तो यह आबकारी नियमों के पालन और ग्रामीण क्षेत्रों में कानून व्यवस्था के लिहाज से गंभीर मामला हो सकता है।

बोलेरो और दोपहिया वाहनों से गांव-गांव शराब पहुंचाने का आरोप ।

स्थानीय ग्रामीणों से प्राप्त शिकायतों के अनुसार मोहगांव विकासखंड की अनेक ग्राम पंचायतों के अंतर्गत आने वाले गांवों में कथित रूप से शराब पहुंचाई जा रही है। आरोप है कि कुछ वाहनों के माध्यम से शराब का परिवहन कर ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी बिक्री की जा रही है। साप्ताहिक बाजारों, होटलों, ढाबों, किराना दुकानों, पान ठेलों और चाय की टपरियों के आसपास भी शराब उपलब्ध होने की शिकायतें सामने आ रही हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यदि शराब की सप्लाई और बिक्री केवल निर्धारित लाइसेंस प्राप्त दुकानों तक सीमित है, तो फिर गांवों में अन्य स्थानों पर शराब कैसे उपलब्ध हो रही है? आखिर इन गतिविधियों की निगरानी कौन कर रहा है? संबंधित विभागों को शिकायतें मिलने के बावजूद प्रभावी कार्रवाई क्यों दिखाई नहीं दे रही है?

मोहगांव शराब दुकान में रेट लिस्ट नहीं, मनमानी कीमतों पर बिक्री की शिकायत

इस पूरे मामले में मोहगांव स्थित शराब दुकान की व्यवस्थाओं को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि शराब दुकान में निर्धारित कीमतों की रेट लिस्ट प्रदर्शित नहीं की गई है। इसके अलावा दुकान के नाम का स्पष्ट बोर्ड भी नजर नहीं आता। ऐसे में ग्राहकों को शराब की वास्तविक कीमत की जानकारी नहीं मिल पाती और मनमाने दामों पर शराब बेचे जाने की शिकायतें सामने आ रही हैं। ग्राहकों का कहना है कि जब दुकान पर रेट लिस्ट ही उपलब्ध नहीं होगी, तो



आम व्यक्ति निर्धारित मूल्य की जानकारी कैसे प्राप्त करेगा? सवाल यह भी है कि संबंधित आबकारी अधिकारियों द्वारा समय-समय पर शराब दुकान का निरीक्षण किया जाता है या नहीं? यदि निरीक्षण होता है, तो रेट लिस्ट और दुकान की पहचान संबंधी व्यवस्थाओं की जांच क्यों नहीं की जा रही है? आबकारी विभाग को इस संबंध में दुकान के लाइसेंस, निर्धारित बिक्री मूल्य और अन्य नियमों की जांच कर स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

युवा पीढ़ी और नाबालिग बच्चों के भविष्य पर चिंता ।

ग्रामीणों ने गांवों में आसानी से शराब उपलब्ध होने पर चिंता व्यक्त की है। उनका कहना है कि यदि ग्रामीण क्षेत्रों में बिना किसी प्रभावी नियंत्रण के शराब की बिक्री होती रही, तो इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ सकता है। विशेषकर नाबालिग बच्चों तक शराब की पहुंच रोकना बेहद जरूरी है। गांवों में शराब की सहज उपलब्धता से युवाओं में नशे की प्रवृत्ति बढ़ने, पारिवारिक विवाद होने और सामाजिक वातावरण प्रभावित होने की आशंका बनी रहती है। ग्रामीणों का कहना है कि परिवार और समाज के लोग युवाओं को नशे से दूर रखने का प्रयास करते हैं, लेकिन यदि गांवों में ही आसानी से शराब उपलब्ध होती रहेगी, तो इन प्रयासों पर भी असर पड़ेगा।

आबकारी विभाग और पुलिस की जिम्मेदारी पर सवाल

मोहगांव विकासखंड के ग्रामीणों का सवाल है कि आखिर क्षेत्र में शराब के कथित अवैध कारोबार पर प्रभावी नियंत्रण क्यों नहीं हो पा रहा है? क्या संबंधित पुलिस और आबकारी विभाग को इन गतिविधियों की जानकारी नहीं है? यदि जानकारी है, तो अब तक क्या कार्रवाई की गई है? ग्रामीणों की मांग है कि केवल औपचारिक निरीक्षण के बजाय वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष जांच अभियान चलाया जाए। संदिग्ध वाहनों, शराब बिक्री के संभावित ठिकानों और निर्धारित दुकान की बिक्री व्यवस्था की निष्पक्ष जांच की जाए।

कलेक्टर और आबकारी विभाग से निष्पक्ष जांच की मांग

ग्रामीणों ने मंडला कलेक्टर एवं जिला आबकारी अधिकारी से मांग की है कि मोहगांव विकासखंड में कथित अवैध शराब बिक्री और परिवहन की निष्पक्ष जांच कराई जाए। बोलेरो वाहन क्रमांक ष्ट्त04स्क्क7902 सहित शिकायतों में सामने आए अन्य वाहनों की भी नियमानुसार जांच की जाए। इसके साथ ही मोहगांव शराब दुकान में रेट लिस्ट प्रदर्शित कराने, दुकान का नाम एवं लाइसेंस संबंधी जानकारी स्पष्ट रूप से लगाने तथा निर्धारित मूल्य पर ही शराब बिक्री सुनिश्चित कराने की मांग की गई है। ग्रामीणों ने यह भी मांग की है कि साप्ताहिक बाजारों, होटल, ढाबों, किराना दुकानों और अन्य संभावित स्थानों पर नियमित निरीक्षण किया जाए। नाबालिगों को शराब की बिक्री रोकने के लिए विशेष निगरानी रखी जाए और नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर संबंधित लोगों के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई की जाए।

अब देखना होगा, जिम्मेदार अधिकारी कब लेंगे संज्ञान?

मोहगांव क्षेत्र में कथित अवैध शराब कारोबार और शराब दुकान की व्यवस्थाओं को लेकर उठ रहे सवालों के बीच अब प्रशासन की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। ग्रामीणों को उम्मीद है कि जिला प्रशासन, पुलिस विभाग और आबकारी विभाग इस मामले को गंभीरता से लेकर जमीनी स्तर पर जांच करेंगे। सबसे बड़ा सवाल यही है कि जब गांव-गांव शराब पहुंचने की शिकायतें सामने आ रही हैं और शराब दुकान में रेट लिस्ट तक प्रदर्शित नहीं होने का आरोप है, तो जिम्मेदार विभाग कब कार्रवाई करेंगे?

जीवनमुक्त सतगुरु बाबा ईश्वरशाह साहिब जी के प्राकट्य दिवस पर होंगे आयोजन

हरे माधव भजन संध्या,मां नर्मदा पूजन, अरदास और रथ भव्य शोभायात्रा के होंगे आयोजन, 12 एवं 13 नवंबर को माहिष्मति घाट पर सजेगा भक्तिमय माहौल ।



हिन्द शिला/ मंडला। जीवनमुक्त सतगुरु बाबा ईश्वरशाह साहिब जी के प्राकट्य दिवस के अवसर पर मंडला में दो दिवसीय धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। हरे माधव परमार्थ सत्संग समिति कटनी मप्र शाखा मंडला के तत्वावधान में 12 एवं 13 नवंबर को विभिन्न धार्मिक आयोजन होंगे। इसमें हरे माधव भजन संध्या, मां नर्मदा पूजन, हरे माधव अरदास, भगवान ईश्वरशाह जी की लीलाओं के दर्शन और भव्य शोभायात्रा आकर्षण का केंद्र रहेंगे। आयोजन के पहले दिन 12 नवंबर को माहिष्मति घाट पर शाम 7 बजे मां नर्मदा जी का पूजन किया जाएगा, इसके पश्चात हरे माधव अरदास होगी। साथ ही दिल्ली से पधार रहे भाई सुनील अरोरा जी के द्वारा हरे माधव भजन संध्या की प्रस्तुति दी जाएगी। एलईडी के माध्यम से हरे माधव ब्रह्म बाल भगवान ईश्वर शाह जी की लीलाओं के श्री दर्शन भी कराए जाएंगे। वहीं 13 नवंबर को शाम 4 बजे हरे माधव शोभायात्रा निकाली जाएगी। यह शोभायात्रा ईश्वर नादम पथक दल के बाल सतगुरु सेवकों जो कि विभिन्न शहरों से पधारेंगे,उनके साथ संगीत प्रस्तुति के साथ बैगा-बैगी चौक से प्रारंभ होकर माहिष्मति घाट तक पहुंचेगी। समिति ने सभी श्रद्धालुओं एवं धर्मप्रेमियों से कार्यक्रमों में शामिल होकर धर्मलाभ लेने की अपील की है।

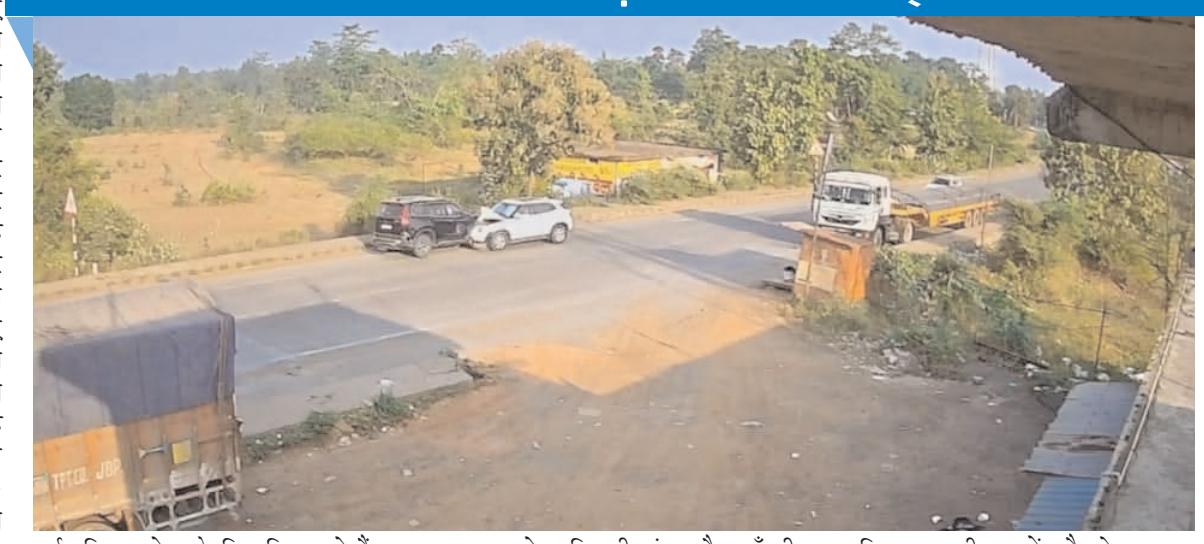
ब्लैक स्पॉट्स

राष्ट्रीय राजमार्ग-30 पर कब थमेगा हादसों का सिलसिला

6-लेन सड़क और 'ब्लैक स्पॉट्स' के समाधान का हो रहा वर्षों से इंतज़ार !

हिन्द शिला, मंडला

मंडला-रायपुर राष्ट्रीय राजमार्ग-30 पर आए दिन हो रहे भीषण सड़क हादसे अब स्थानीय लोगों के लिए गहरे खौफ और आक्रोश का कारण बनते जा रहे हैं। हाल ही में अंजनिया और मेढ़ाताल के पास हुए जानलेवा हादसे ने एक बार फिर यह बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर राष्ट्रीय राजमार्ग-30 पर मौतों और गंभीर दुर्घटनाओं का यह सिलसिला कब थमेगा? क्या प्रशासन और एनएचएआई केवल हादसों की गिनती करते रहेंगे या धरातल पर ठोस कदम भी उठाए जाएंगे? जानलेवा बनता जा रहा राष्ट्रीय राजमार्ग-30, रफ्तार का जुनून और सुरक्षा की अनदेखी। मंडला से गुजरने वाला यह नेशनल हाईवे छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग है, जिस पर दिन-रात भारी वाहनों और तेज रफ्तार गाड़ियों का दबाव बना रहता है। सड़क पर संकरे मोड़, रोशनी की कमी, अनियंत्रित रफ्तार और कई जगहों पर सड़क का खराब रख-रखाव लगातार हादसों की वजह बन रहा है। आए दिन निर्दोष लोग अपनी जान गंवा रहे हैं और



कई परिवार हमेशा के लिए बिखर रहे हैं।

आदिवासी अंचल की लाइफलाइन बना 'डेथ ट्रैप' !

मंडला और आसपास का पूरा इलाका मुख्य रूप से आदिवासी अंचल है। यहाँ की ग्रामीण जनता अपनी दैनिक ज़रूरतों, हाट-बाजार, कृषि उपज और इलाज के लिए इसी ह्वा-30 हाईवे पर निर्भर है। छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश को जोड़ने वाले इस मुख्य मार्ग पर दिन-रात भारी वाहनों और तेज रफ्तार गाड़ियों का दबाव रहता है। अंचल की भौगोलिक स्थिति के कारण सड़क पर संकरे मोड़, रोशनी का अभाव, और गांव-कस्बों के संपर्क मार्गों पर सुरक्षा इंतजामों की कमी के चलते स्थानीय आदिवासी भाई-बहन और राहगीर आए दिन इन हादसों का शिकार बन रहे हैं।

जनता की मांग, कब बनेगा 6-लेन हाईवे?

स्थानीय निवासियों और यात्रियों की लंबे समय से मांग है कि इस व्यस्ततम मार्ग को चौड़ा कर 6-लेन में तब्दील किया जाए। 6-लेन हाईवे बनने से बीच में कंक्रीट डिवाइडर होंगे, जिससे आमने-सामने की भिड़ंत पर पूरी तरह लगाम लग सकेगी सड़क चौड़ी होने से हाईवे किनारे के संकरे रास्तों और ओवरटेकिंग के जोखिम से निजात मिलेगी।

जब तक 6-लेन नहीं बनता, तब तक तुरंत यह कदम है जरूरी ।

हाईवे पर जहां सबसे ज्यादा हादसे होते हैं (जैसे अंजनिया-मेढ़ाताल मोड़), वहां तुरंत सांकेतिक बोर्ड, रेडियम स्ट्रिप्स और ब्लिंकर लाइट्स लगाई जाएं। तेज रफ्तार से दौड़ने वाले वाहनों का चालान काटने के लिए हाईवे पर स्पीड कैमरों और इंटरसेप्टर वाहनों की तैनाती हो।रात के वक्त दृश्यता बढ़ाने के लिए खतरनाक पॉइंट्स पर स्ट्रीट और हाई-मास्ट लाइटें लगाई जाएं। हादसों के बाद 'गोल्डन आवर' में घायलों को तुरंत इलाज दिलाने के लिए हाईवे पेट्रोलिंग और त्वरित एम्बुलेंस सेवा तैनात रहे।

जनहित में शासन-प्रशासन से अपील ।

नेशनल हाईवे-30 अब डेथ ट्रैप (मौत का जाल) बनता जा रहा है। जनहित में यह आवश्यक है कि जिम्मेदार जनप्रतिनिधि और एनएचएआई अधिकारी इस मार्ग के चौड़ीकरण और 6-लेन निर्माण की प्रक्रिया में तेजी लाएं, ताकि सड़क पर सफर करने वाले हर नागरिक की जान सुरक्षित रह सके।

जब नरसिंहपुर में रुक सकती हैं अवैध कॉलोनियों की रजिस्ट्री, तो सिवनी जिला प्रशासन क्यों साधे है मौन

नरसिंहपुर कलेक्टर ने शुभम कॉलोनी प्रोजेक्ट-2 पर लगाई रोक

सिवनी में अवैध कॉलोनियों पर मेहरबान प्रशासन? शिकायतों पर जम रही धूल

हिन्द शिला, सिवनी

एक तरफ जहां पड़ोसी जिले नरसिंहपुर में प्रशासन अवैध कॉलोनाइजरों के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए भूखंडों की खरीद-बिक्री पर प्रतिबंध लगा रहा है, वहीं दूसरी तरफ सिवनी जिले में अवैध कॉलोनियों का कारोबार धड़ल्ले से फल-फूल रहा है। हाल ही में नरसिंहपुर कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह के न्यायालय में करेली स्थित शुभम कॉलोनी प्रोजेक्ट-2 (राजनगर) के पार्टनर राजकुमार पिता केवलचंद जैन के विरुद्ध अवैध कॉलोनी निर्माण का प्रकरण सामने आया। मामले की समीक्षा के दौरान पाया गया कि अनावेदक द्वारा मध्यप्रदेश नगर पालिका अधिनियम/पंचायत राज अधिनियम के नियमों व प्रावधानों के तहत सक्षम अधिकारी से बिना विकास अनुज्ञा प्राप्त किए मौजा करेली स्थित भूमि खसरा नंबर 324/2/2 में से भूखंडों का विक्रय किया जा रहा था। मामले की गंभीरता को देखते हुए कलेक्टर न्यायालय ने उक्त खसरा नंबर के सभी बटांकों और भूखंडों के क्रय-विक्रय पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। साथ ही जिला पंजीयक एवं उप पंजीयक करेली को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि इस भूमि से संबंधित किसी भी दस्तावेज का पंजीयन न किया जाए।





सिवनी जिला कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार जी -क्या नरसिंहपुर की तर्ज पर सिवनी में भी अवैध कॉलोनाइजरों पर शिकंजा कसेगा जिला प्रशासन?

सिवनी जिले में धड़ल्ले से कट रहे अवैध प्लॉट, शिकायत फाइलें चाट रहीं धूल

नरसिंहपुर जिले की इस त्वरित और सख्त कार्रवाई के विपरीत, सिवनी जिले में स्थिति बेहद चिंताजनक बनी हुई है। सिवनी जिले में सैकड़ों अवैध कॉलोनियां बस चुकी हैं, लेकिन जिला प्रशासन और जिम्मेदार महकमा आंखें मूंदे बैठा है। चौंकाने वाली बात यह है कि सिवनी जिला मुख्यालय में ही दर्जनों अवैध कॉलोनियां विकसित हो चुकी हैं। केवल मुख्यालय ही नहीं, बल्कि जिले की सभी तहसील मुख्यालयों में भी बिना किसी वैध अनुमति, डायवर्जन और टाउन एंड कंट्री प्लानिंग की स्वीकृति के बिना कृषि भूमि पर धड़ल्ले से प्लॉटिंग का खेल जारी है। स्थानीय नागरिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा समय-समय पर इन अवैध कॉलोनाइजरों के खिलाफ सबूतों के साथ शिकायतें दर्ज कराई जाती हैं, लेकिन विडंबना यह है कि कार्रवाई के नाम पर केवल आश्वासन मिलते हैं। प्रशासनिक दफ्तरों में शिकायतों की फाइलें धूल चाट रही हैं और कॉलोनाइजर बेखौफ होकर आम जनता को बिना मूलभूत सुविधाओं (सड़क, नाली, बिजली) के प्लॉट बेचकर अपनी जेबें भर रहे हैं।

उठ रहे गंभीर सवाल

- जब नरसिंहपुर कलेक्टर अवैध कॉलोनियों की रजिस्ट्री पर रोक लगा सकते हैं, तो सिवनी प्रशासन मौन क्यों है?
- क्या सिवनी जिले में अवैध कॉलोनाइजरों को प्रशासनिक संरक्षण प्राप्त है?
- कलेक्टर जनसुनवाई और जनशिकायतों की फाइलों पर कार्रवाई कब होगी?
- सिवनी की जनता अब मांग कर रही है कि नरसिंहपुर जिले की तर्ज पर सिवनी में भी जांच अभियान चलाकर अवैध कॉलोनाइजरों पर एफआईआर दर्ज की जाए और उनकी जमीनों की रजिस्ट्री पर तत्काल रोक लगाई जाए, ताकि भोले-भाले खरीदार अपनी गाढ़ी कमाई गंवाने से बच सकें।

किरार समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आज

मेधावी विद्यार्थियों को मिलेगा सम्मान

खैरा पलारी के मंगल भवन में होगा आयोजन, 10वीं-12वीं में 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों सहित NEET और JEE में सफल प्रतिभाओं का होगा सम्मान।

हिन्द शिला, सिवनी

अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा के जिला मीडिया प्रभारी देवेंद्र ठाकुर ने बताया कि अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा जिला सिवनी के तत्वावधान में आज 11 नवंबर 2026, बुधवार को किरार समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन खैरा पलारी स्थित मंगल भवन में सुबह 10 बजे से किया जाएगा। इसमें शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर समाज का मान-सम्मान एवं गौरव बढ़ाने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा।महासभा के जिला अध्यक्ष बृजमोहन पटेल ने बताया कि समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की दिशा में प्रेरित करने के उद्देश्य से यह आयोजन किया जा रहा है। समारोह में शैक्षणिक सत्र 2022-23, 2023-24, 2024-25 एवं 2025-26 के दौरान कक्षा 10वीं एवं 12वीं की वार्षिक परीक्षाओं में 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक अर्जित करने वाले किरार समाज के छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही NEET एवं JEE जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का भी सम्मान किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान मेधावी विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनकी उपलब्धियों का सम्मान किया जाएगा। महासभा का उद्देश्य विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़ाना, नई पीढ़ी को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना तथा समाज की शैक्षणिक प्रतिभाओं को उचित मंच प्रदान करना है।निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सुबह 10 बजे से आयोजन प्रारंभ होगा। सुबह 10:30 बजे से दोपहर 12 बजे तक भोजन की व्यवस्था रहेगी। इसके पश्चात दोपहर 12:30 बजे अतिथियों का स्वागत एवं वंदन गीत प्रस्तुत किया जाएगा। तत्पश्चात जिला अध्यक्ष द्वारा उद्बोधन दिया जाएगा और मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। सम्मान समारोह के पश्चात कार्यक्रम का समापन होगा। अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा जिला सिवनी की जिला कार्यकारिणी एवं समस्त सामाजिक बंधुओं ने समाज के लोगों से कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनाने की अपील की है।

मंडला पुलिस की अवैध शराब के खिलाफ बड़ी कार्रवाई

348 पाव अवैध शराब के साथ एक आरोपी गिरफ्तार, 45,600 रुपए का माल जप्त!

हिन्द शिला, मंडला

जिले में अवैध शराब के संग्रहण एवं विक्रय पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक मंडला राजेश रघुवंशी के निर्देशन में लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में दिनांक 09 नवंबर 2026 को पुलिस चौकी अंजनिया को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम झिंगराघाट पुल के पास एक व्यक्ति अपने घर में अवैध रूप से शराब संग्रहित कर बिक्री करने की तैयारी में है। सूचना पर थाना प्रभारी बम्हनी सत्येंद्र रघुवंशी के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा तत्काल मौके पर दबिश दी गई।

पुलिस को देखकर भागने का प्रयास कर रहे व्यक्ति को घेराबंदी कर पकड़ा गया। पूछताछ में आरोपी की पहचान नकुल पटेल, उम्र 54 वर्ष, निवासी ग्राम झिंगराघाट, चौकी अंजनिया, थाना बम्हनी, जिला मंडला के रूप में हुई। आरोपी के घर की तलाशी लेने पर 07 पेटियों में रखी कुल 348 पाव अवैध शराब बरामद की गई।

इस प्रकार कुल 62.640 लीटर शराब, अनुमानित कीमत 45,600 रुपए जप्त की गई।आरोपी के विरुद्ध थाना बम्हनी में आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) के तहत अपराध पंजीबद्ध कर वैधानिक कार्रवाई की गई।



इनकी रही सराहनीय भूमिका

उक्त कार्रवाई में सहायक उप निरीक्षक कृष्ण कुमार चौबे, प्रधान आरक्षक संतोष कुमार मरावी, नारायण प्रसाद उइके एवं जगदीश मसराम, आरक्षक अनिल भलावी, अंचल बघेल, रोहित सिंगौर, विनोद तेकाम, लीलीमणि आर्मो एवं कैलाश यादव की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कान्हा टाइगर रिजर्व के बफर जोन में मृत मिला नर तेंदुआ

पशु चिकित्सकों ने किया शव परीक्षण, प्राकृतिक मृत्यु होने की जताई आशंका।

हिन्द शिला, बालाघाट

कान्हा टाइगर रिजर्व के बफर जोन वनमंडल अंतर्गत खापा बफर परिक्षेत्र की सरेखा बीट में वन गश्ती के दौरान एक नर तेंदुआ मृत अवस्था में मिला। तेंदुए का शव 9 नवंबर 2026 को कक्ष क्रमांक 1131 में पाया गया। इसकी सूचना मिलने पर वन विभाग के अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर आवश्यक कार्रवाई की। तेंदुए के शव का परीक्षण पशु चिकित्सा अधिकारी बैहर डॉ. सुनील गोयल एवं सहायक पशु चिकित्सा अधिकारी परसवाड़ा डॉ. नेहा आहके द्वारा किया गया। शव परीक्षण के दौरान तेंदुए की मृत्यु स्वाभाविक एवं प्राकृतिक कारणों से होना प्रतीत हुई। शव परीक्षण के बाद निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार तेंदुए का विधिवत भस्मीकरण किया गया।

इस दौरान क्षेत्र संचालक, कान्हा टाइगर रिजर्व मंडला, नायब तहसीलदार बैहर, प्रोजेक्ट ऑफिसर, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के प्रतिनिधि, सहायक संचालक मलाजखंड, ग्राम पंचायत धनवार के सरपंच, ईको विकास समिति नारना के अध्यक्ष सहित वन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी आवश्यक औपचारिकताएं निर्धारित प्रक्रिया के तहत पूरी की गई।



बढ़ी आमदनी

पराली बनी मुनाफे का जरिया, बेलर मशीन से किसान की बढ़ी आमदनी

खेतों में पराली जलाने के बजाय बना रहे 35 से 40 बंडल, किराये पर मशीन देकर भी कर रहे कमाई

हिन्द शिला, बालाघाट

धान की कटाई के बाद खेतों में बचने वाली पराली कभी किसानों के लिए मुसीबत मानी जाती थी। इससे छुटकारा पाने के लिए किसान अक्सर खेतों में ही आग लगा देते थे। लेकिन अब आधुनिक कृषि तकनीक ने इसी पराली को कमाई का जरिया बना दिया है। बालाघाट जिले के लालबर्रा विकासखंड अंतर्गत ग्राम घोटी के प्रगतिशील किसान तिरथसिंह बिसेन ने इसकी मिसाल पेश की है। उन्होंने पराली प्रबंधन की चुनौती को अवसर में बदलते हुए बेलर मशीन खरीदी है। अब वे न केवल अपने खेत की पराली से बंडल तैयार कर रहे हैं, बल्कि आसपास के किसानों को किराये पर मशीन उपलब्ध कराकर अतिरिक्त आमदनी भी अर्जित कर रहे हैं। बालाघाट जिले में बड़े पैमाने पर धान की खेती होती है।

इन दिनों धान की कटाई का कार्य शुरू हो चुका है। कटाई के बाद खेतों में बड़ी मात्रा में पैरा (पराली) बच जाती है, जिसका उचित प्रबंधन करना किसानों के लिए चुनौती रहता है। ऐसे में बेलर मशीन किसानों के लिए उपयोगी साबित हो रही है। यह मशीन खेतों में बिखरे फसल अवशेषों को एकत्रित कर उनके व्यवस्थित बंडल तैयार करती है। इससे एक ओर खेतों में पराली जलाने की जरूरत नहीं पड़ती, वहीं दूसरी ओर पराली का उपयोग और व्यावसायिक महत्व भी बढ़ रहा है।



एक एकड़ में तैयार करते हैं 35 से 40 बंडल

बी-पैक्स समिति घोटी के सदस्य किसान तिरथसिंह बिसेन ने जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित बालाघाट की शाखा लालबर्रा के माध्यम से मध्यमकालीन ऋण योजना का लाभ लेकर बेलर मशीन खरीदी है। तिरथसिंह बताते हैं कि पहले धान की कटाई के बाद खेतों से पैरा हटाने के लिए मजदूरों की समस्या का सामना करना पड़ता था। कई बार पराली का निपटान करना भी मुश्किल हो जाता था। अब बेलर मशीन ने यह काम आसान कर दिया है। वे एक एकड़ खेत में मशीन की मदद से लगभग 35 से 40 बंडल तैयार कर लेते हैं। अपने खेतों में उपयोग के साथ ही वे आसपास के किसानों के खेतों में भी किराये पर मशीन भेज रहे हैं। इससे उन्हें अतिरिक्त आय हो रही है और दूसरे किसानों को भी पराली प्रबंधन की सुविधा मिल रही है।

कलेक्टर की अपील से मिली प्रेरणा

कलेक्टर एवं जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के प्रशासक आदित्य सिंह द्वारा किसानों को लगातार पराली नहीं जलाने तथा इसके बेहतर प्रबंधन के लिए जागरूक किया जा रहा है। उनकी इस पहल से प्रेरित होकर तिरथसिंह ने बेलर मशीन खरीदने का निर्णय लिया। कलेक्टर श्री सिंह ने बताया कि बेलर मशीन आधुनिक कृषि यंत्र है, जो फसल कटाई के बाद खेतों में बचे अवशेषों को व्यवस्थित बंडलों में बदल देती है।

इससे पराली जलाने की समस्या कम होगी और किसानों को आर्थिक लाभ भी मिल सकेगा। उन्होंने किसानों से आधुनिक कृषि यंत्रों को अपनाकर पराली प्रबंधन करने की अपील की है।

पराली अब बेकार नहीं, आय का नया साधन

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के सीईओ अभिनव सिंह बघेल ने बताया कि पहले किसान पराली को फसल का अनुपयोगी हिस्सा मानकर जला देते थे। इससे पर्यावरण प्रदूषित होने के साथ खेतों की मिट्टी को भी नुकसान पहुंचता है। लेकिन आधुनिक तकनीक के उपयोग से अब यही पराली किसानों के लिए आय का नया साधन बन रही है। बी-पैक्स समिति घोटी के सदस्य तिरथसिंह बिसेन ने मध्यमकालीन ऋण योजना के माध्यम से बेलर मशीन खरीदकर यह साबित किया है कि कृषि में नई तकनीक अपनाकर खेती के साथ अतिरिक्त व्यवसाय भी किया जा सकता है।

सहकारी बैंक के माध्यम से किसानों को आधुनिक कृषि यंत्रों के लिए ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है, ताकि वे खेती को अधिक लाभकारी बना सकें। तिरथसिंह बिसेन की यह पहल जिले के अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणादायक है। उनकी कहानी बताती है कि जिस पराली को कभी किसान खेतों से हटाने के लिए परेशानी मानते थे, वही अब अतिरिक्त कमाई का साधन बन सकती है। जरूरत है तो बस सोच बदलने और आधुनिक तकनीक अपनाने की।

छिंदवाड़ा के गुलाबरा में दीपावली की रात हुड़दंग मचाने वाले 7 युवकों को पुलिस ने किया गिरफ्तार, 2 की तलाश जारी

दुकानों की ओर रॉकेट और सुतली बम छोड़ने की शिकायत के बाद हरकत में आया पुलिस प्रशासन, CCTV और अन्य साक्ष्यों के आधार पर हुई पहचान

हिन्द शिला /साहिर मंसूरी, छिंदवाड़ा

शहर के गुलाबरा क्षेत्र में दीपावली की रात आतिशबाजी के नाम पर सड़क पर हुड़दंग और खतरनाक हरकतों का मामला अब पुलिस कार्रवाई तक पहुंच गया है। दुकानों और मुख्य मार्ग की ओर रॉकेट तथा बड़े सुतली बम छोड़ने की शिकायतों को हमारे अख़बार हिन्द शिला द्वारा प्रमुखता से उठाए जाने के बाद कोतवाली पुलिस ने मामले में सात युवकों की पहचान कर उनके खिलाफ कार्रवाई की है।

वहीं, घटना में शामिल बताए जा रहे दो अन्य युवकों की तलाश जारी है। गौरतलब है कि दीपावली की रात गुलाबरा क्षेत्र के मढ़िया और मेन रोड पर कुछ युवकों द्वारा देर रात तक सड़क पर आतिशबाजी करने और एक-दूसरे की ओर सुतली बम फेंकने की शिकायत सामने आई थी। स्थानीय लोगों और दुकानदारों ने इस तरह की गतिविधियों से जान-माल को खतरा होने की आशंका जताई थी। लोगों का कहना था कि दुकानों की ओर रॉकेट छोड़ना किसी बड़े हादसे का कारण बन सकता था। इसके बाद क्षेत्रवासियों ने पुलिस प्रशासन से सीसीटीवी फुटेज की जांच कर संबंधित युवकों की पहचान और कार्रवाई की मांग की थी।

एसपी के निर्देश पर पुलिस ने की कार्रवाई

मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक अजय पांडे ने आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके बाद कोतवाली पुलिस ने मामले की जांच करते हुए घटना में कथित रूप से शामिल युवकों की पहचान की। पुलिस के मुताबिक, कार्रवाई के दायरे में आए सात युवकों के नाम पार्थ, देवेश, अमोल, श्लोक, कार्तिक, अमन और प्रिंस हैं। वहीं, दो अन्य युवकों की तलाश की जा रही है।



खबर का हुआ बड़ा असर

सार्वजनिक सुरक्षा से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं

एसपी अजय पांडे ने स्पष्ट किया कि सार्वजनिक स्थानों पर हुड़दंग कर आम नागरिकों को परेशान करने और त्योहारों के दौरान शांति व्यवस्था प्रभावित करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। पुलिस का कहना है कि इस तरह की गतिविधियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

जनहित के मुद्दे को उठाना ही पत्रकारिता की जिम्मेदारी

गुलाबरा क्षेत्र की यह घटना एक बार फिर सार्वजनिक स्थानों पर आतिशबाजी के दौरान सुरक्षा और नागरिक जिम्मेदारी का सवाल सामने लाती है। त्योहारों की खुशियां मनाने का अधिकार सभी को है, लेकिन किसी दूसरे व्यक्ति की जान, दुकान और संपत्ति को खतरे में डालने का अधिकार किसी को नहीं है। पुलिस की कार्रवाई से क्षेत्रवासियों में सुरक्षा को लेकर उम्मीद जगी है। अब शेष दो युवकों की तलाश और मामले में आगे की कानूनी कार्रवाई पर लोगों की नजर बनी हुई है।

(स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक **संजीत सिंह बघेल** द्वारा अद्वैत प्रकाश चव्हाण, 702 ग्रीन सिटी 03, वर्धा रोड अर्पिट 02, ऑक्सीजन पार्क नागपुर, महाराष्ट्र 441108 से प्रकाशित 8878839301. **संपादक संजीत सिंह बघेल**।) समाचार पत्र से संबंधित सभी विवादों के निपटारा के लिए न्यायिक क्षेत्र सिवनी **जिला सिवनी** न्यायालय रहेगा।